

शुक्रासुमिवृत्
श्रीवशावाग्रवाङ्मानसि



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



श्री वसुदेवाय नमः

(1)



धृक्कासुमिवृत्
श्री वसुदेवाय नमः

उत्तराखण्ड

74/

ARCHIVES

ज्ञायामः॥ आचार्यनः चंथः थस्यं॥ सनाक्षत्रः धात्रः ३ पालय॥ मधुलसः
त्रिपुमानमाय॥ स्वस्तिवाक्कपालयाडा॥ अकृतापवादिः॥ ॥ नाक्षत्रः
ः वज्रमधुलसं॥ धृतिपालयं॥ आचार्यनः वजनः पूर्वदात्रं निस्यः म
धनलायनमाय॥ धनमधुलयाः नृनक्रय॥ कित्रनदडा थसकल
सा॥ वजनधीर्मा कित्रनथाय॥ वाक॥ ओं वज्रकीलयः उल्कीलयः स
वकीलांचवंधना स्थापय दू ३ दू हाः॥ ओं नृनरूद्रदात्रं तिष्ठसिधिलाय

नः सर्वार्थसाधनिसाहा॥ धृतिवाक्कपालयं कीलनलिय॥ ॥ धन
मधुलडाकाय॥ क्रुसः ससकथन॥ ॥ कलसवसुनतियकं॥ नृलपु
लावजात्रा॥ धननिर्धसथनाडा॥ नृसुदलचाया॥ नडा नागध्वनः
ज्ञाकिपूवहलपतंकसेतय २ वनिडा २ नृनका २ तय॥ नागलाव
नाथ॥ नृनितिगून्यताननक्रयं विस्वस्माजः कलीकायाः मधवजः व
नृनस्यतं॥ पूर्वदत्रः नृनक्रनिलः॥ दक्षिणदत्रः पद्मं॥ यदि मध

नः न के कं ॥ उ ल न द नः वा गु कि ॥ न श न द नः म हा प द्य ॥ अ न द न
 सं ख पा ल ॥ ने म ल द नः क ण् काल कं ॥ वा य द नः क लिकं ॥ व हि ष
 सर्व ना ग वि वि न्य ॥ गु गु लि सं न य ॥ प क्ष प चान प र्जा ॥ प ष्य न्ना स ॥ उं व
 नू ना य स्वा हा ॥ उं अ न न ता य स्वा हा ॥ उं प द्मा य स्वा हा ॥ उं न क का
 य स्वा हा ॥ उं वा सू की य स्वा हा ॥ उं म हा प द्मा य स्वा हा ॥ उं शं ख पा
 ला य स्वा हा ॥ उं क क्क ट का य स्वा हा ॥ उं कू ली का य स्वा हा ॥

पा २ न ३

अ र्च वा क ॥ उं अ न नः वा सू किः न क कः क क्क ट कः प द्मः मा हा प द्यः
 सं ख पा लः क लिकः व नू न शः द वृ तिः म हा द व तिः सा म शि रि वः द
 ध नः अ प तालः कू नू र न द्याः प द्मः सा ग नः म हा सा ग नः न प
 म हा न पः शी कानिः म हा कानिः सू त्र पः म हा सू त्र पः ल द्वा दि
 क म त्रा द लः शि रिः म हा शि रिः ल क ल द्याः ग क्का ग क्कः म हा ना ग
 धि प तिः सर्वः अ वः कू ३ द ६ र स्वा हा ॥ ॥ क्षी त्र व लि वि य ॥ ना ग

प्रज्ञामर्गतं ॥ शुद्धमार्गादिः ॥ त्रकानमखत्वादिः ॥ दकिना ॥
थूतिधूनकाडा ॥ अथः मेहावाक्कः दानपतिः स्वस्तिवाक्कः घालयं ॥
बुद्धाद्यतः शानाडाः नागयातदाहलय ॥ वाक्क ॥ ॐ त्रमृष्टिग्लीकध
नोचमलुलः वहिमियाः नागाधियतिः विलनिष्ठिः ॥ मनलंप्रनतः
ॐ पित्रिशुः साहा ॥ कलसहाकलय ॥ ततोत्रः नागे मेहनासः
कालनः पतालनीयमानं चिन्मयं ॥ तिथ्यालखः कलससथस्य रुया

ॐ गृहः मलुलथनाथसः लंवनहाहायाय ॥ ॥ सासधिंवधिलाडा
॥ कूमात्रिसाधन

ॐ हुनहनः वज्रक्रोधद्वन्द्व ॥ धमन्तु नः रुमिधिमाडावानरुमिसद
ॐ हुनहनमात्रयस्सर्वः दुष्टान् व्याहयस्त्रैलोक्यं ॥ धम
न्तु नः ॥

ॐ नमो श्रीवृषभः ॥ ॐ नमो श्रीरत्ना कना थायः ॥ शुक्रासुमिव ह
विधिमाह ॥ द्वापात्रमाद्यपासमदल थायः ॥ रुतसाः वृषभसि विदिन उयकः
मरुतसाः रुक्मक उयकः ॥ आतान विदिन उयक दडाः ॥ पूडा कृच्छि उय
क दडाः ॥ राकिं कृ १ उयक दडाः ॥ रुतसा कलसन उयकः ॥ मरुतस
या द्वा लोक श्वनया विद्रुतया धरु वायक ॥ किं किनिशालपने ॥ त्र
हाकर २ कृ २ः धरुः पुतापः चामनः ॥ त्रसुमकुलः ॥ त्रनकन कुनत य ॥

कलसः सगंः गनसः महाकातः ॥ रुतमात्राः वालकुमारीः मनाः
द्रुक्ः सिद्धमूः पञ्चगवः बलिपात्रः ॥ त्रमाद्यपासः पुतिमादिदव
ताः त्रनेकः देवताः पवाहाः रुक्मवाक्छ ॥ ॥ शुक्रार्थः लिख्य ॥ गुरु
मंदल ॥ पञ्चगवः धन ॥ काथन विषय ॥ दिगबलिविषय ॥ दसदिगसहा
ल ॥ सिधलनय ॥ लोक श्वनया समाधियाय ॥ किलस पूजा ॥ दडा पूजाः द्रु
क सिद्धमूनपी ॥ ॥ धनमकुलमालवना ॥ राकि कास्य रुतलप ॥ ॐ न

माः श्रीनलत्रयायः मेरिकननामदितापकाहावयत् ॥ ॐ समन्वाहनं
मां वृद्धात्रस्यखादिहसंष्टिता ॥ तिनं ३ ॥ थनदाहास्वानज्ञानकं वाका ॥ ॐ न
मां श्रीनृमाद्यपागालोकध्वनाय ॥ श्रीकात्रसंरुवनोथः स्मिग्यमानसः नृमा
द्यपागनामानालोकनाथं नमामिह ॥ स्वनमलुलसंय ॥ राविकास्यं हा
रुपं रावना ॥ ॐ श्वरावगुद्धाः सर्वधर्मा नायादि ॥ ॐ नृनां विलावायुद्र
दिपंकात्रनविध्वदलपयः कलिकापनिचलुमलुलषुतस्यापनिद्रिकानं

तस्यनिलभनः श्रीनृमाद्यपासलास्वनलावयत् संयकनूलवकीर्तः नृषु
वाहविरुषितः समदितं विसा नाकं कनूनास्मिग्यमानसः नृतामकतध
नसातः यहायविषः नायसः नाताहकसिहमायकः वनदपैरं धनिनः
ॐ नमा नृमाद्यपागहं ॥ थनदसुखधन ॥ ॐ दकि नदसु नृकात्रनवदुम
लुल ॥ ॐ वामदसु नृकात्रनसूर्यमलुल ॥ ॐ वद्रपयहसहं ॥ कनयलवद
किन ॥ ॐ ॐ श्रीं रवेदं ॥ वामन ॥ ॐ लोमां पां नो हं ॥ ॐ नृः दसाहा ॥ षदना

स॥ उँ वज्रलकदं ॥ ॐ ति पा पखदन ॥ उँ त्र मा घ पा ष्म क्रीः सिलस ॥ उँ
 जया यदं ॥ लला ना ॥ उँ विजया यदं ॥ क ॥ उँ दं स्वा वा ॥ दिदि ॥ उँ जय वि
 जयदं ॥ नारिः ॥ उँ त्र लय प्रदा यदं ॥ याद ॥ धृति खग नं रल ॥ ॥ हनं जडं न ॥
 उँ मे त्रिया यदं ॥ सिल ॥ उँ कति गरु दं ॥ लला न ॥ उँ वज्र विला दं ॥ च द्दय ॥
 उँ खग रु दं ॥ कर्त दय ॥ उँ ला क ष्व न दं ॥ बाहर ॥ उँ मं रु धा व दं ॥ त्रि का ॥ का
 धू ॥ उँ सर्व नि व न वि स्कर्हि दं ॥ द दय ॥ उँ सम क र ड दं ॥ स वा ग ॥ ह न र व

दहिन वा द १

उँ या य ॥ उँ दं त्र जि ता य दं ॥ ला दा ॥ उँ दं त्र प त्र जि ता य दं ॥ वा म वा द ॥ उँ दं
 मा त्र से न्य प्र म र्द ना य दं ॥ मूरव ॥ र बा ल ॥ उँ त्र काल मूल क य ष म निय दं ॥ द दि
 नू जा ॥ उँ धनं डाय दं ॥ द हिन गानू ॥ जडा पुलि ॥ उँ व संध ना य दं ॥ वा म जानू
 र प डा पुलि ॥ उँ त्र मृ ता ला य दं ॥ पृ ष ॥ पा थ ॥ उँ त्र मा घ पा स त्र दं वं हा सा ह
 ॐ ति न्या स ॥ गृ क र्वे न धू पा ॥ ला व ना व न ॥ उँ द दि सु द्रि का व नः ल
 हिः मू द्वा स क्का यः त्र क नि षुः त्र व न स्मि ताः ॥ श्री त्र मा घ पा सः समा द

ॐ अमृतं कृष्णं नमोस्तुते ॥ मधु पक्विम

लेः शक्यं यत् ॥ पाद्यादितय ॥ ॐ किं त्रमाद्यया सलाकं वायव्यं
प्रतिष्ठा स्थादा ॥ त्रं द्रं वेदा ॥ पूषन्नास ॥ मंदलं ॥ ॐ त्रमाद्यया सलाकं
त्राय किं स्थादा ॥ मधु ॥ ॐ किं त्रैलोक्यं विद्याय वज्रपूषं प्रतिष्ठा स्थादा ॥ मधु
ॐ मनिपद्यं ॥ मधु ॥ ॐ त्रमृता त्राय वज्रपूषं प्रतिष्ठा स्थादा ॥ मोलिसिलपूर्व
ॐ एकस्मै वज्रपूषं प्रतिष्ठा स्थादा ॥ नक्षत्रं पूर्व ॥ ॐ त्रमाद्या कृसायसा
दा ॥ त्रं सुदधि ॥ ॐ तात्रायै स्थादा ॥ उदासी पक्वि ॥ ॐ एकं तात्रायै

दा ॥ त्रसं धां उत ॥ ॐ सुधनकृमा त्राय सादा ॥ यस्तु कृत्वा न ॥ ॐ त्रार्थावलाक
नं धनं त्राय सादा ॥ धनं यद्यन्नेति ॥ ॐ स्वस्व सर्वं धनं यसादा ॥ कृष्णं वायव्यं
ॐ रुयग्रीवाय सादा ॥ त्रं नदयद्यं ॥ ॐ त्रं सुदलस ॥ पिवा
कं पूर्व ॥ ॐ त्रयनात्रिनाय सादा ॥ पूर्व ॥ ॐ त्रयाय सादा ॥ दक्षिण ॥ ॐ माल
मेनायुमर्दनाय सादा ॥ पक्विम ॥ ॐ वज्रदाय सादा ॥ उत ॥ ॐ त्रकालमृत्यु
प्रसमनाय सादा ॥ त्रं ॥ ॐ त्रमाय सादा ॥ नेमन ॥ ॐ विजयाय सादा

ॐ नर

ब्रह्मज्ञानि।

वायव्या ॥ ॐ नमः प्रविश्याय स्वाहा ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॥ तत्र वाक्
स्वादस्य पूर्वकं ॥ मप्रत्येकवृद्धाय स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ नमः सूवर्चप्रतापि
नदितं नारायणः तथा गताय स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ नमः सिंहविक्रान्तः नारायण
य स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ नमः सुप्रतिष्ठितनारायण स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ नमः समन्त
कृतं श्रीकृष्णनारायण स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ नमः विषयिनय तथा गताय स्वाहा ॥ २ ॥
॥ ॐ नमः सिधिन तथा गताय स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ नमः विश्वरूपाय तथा गता

य स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ नमः कर्कशद्राय तथा गताय स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ नमः कन
कमूनि तथा गताय स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ नमः कालपाय तथा गताय स्वाहा
॥ ३ ॥ ॐ नमः शक्रमूनय तथा गताय स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ नमः सुप्रति
किर्तितनामधाराय तथा गताय स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ नमः समकावलासा
य विजितसंग्रामश्रिय तथा गताय स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ नमः ॐ दुर्कतुष्ट
रुश्रिय तथा गताय स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ नमः नक्षत्रप्रणाल्यश्च नारायण

स्वाहा ॥ ४३ ॥ ॐ तिरवा दस दल ॥ हन विदि ग पूल ॥ ॐ पय ना नाय स्वाहा ॥ प
र्व पूल ॥ ॐ धप ना नाय स्वाहा ॥ द किं पूल ॥ ॐ दि य ना नाय स्वाहा ॥ प
किं पूल ॥ ॐ गध ना नाय स्वाहा ॥ उ न न पूल ॥ थ या पि न ॥ ॐ ॐं द्रा य स्
ना धि प न स्वाहा ॥ पूर्व ॥ ॐ र मा य प्र ना धि प न स्वाहा ॥ द किं ॥ ॐ व नू ना य
ना ग धि प न य स्वाहा ॥ प किं ॥ ॐ कू व ना य र का धि प न य स्वाहा ॥ उ न ॥ ॐ नू र
न ना धि प न य स्वाहा ॥ नू र ॥ ॐ नै म ह्य ना क सा धि प न य स्वाहा ॥ नै म ह्य ना क सा धि प न य स्वाहा ॥

सू ५
वायव ना धि प न य स्वाहा ॥ वायव ॥ ॐ ॐं न र ना धि प न य स्वाहा ॥ ॐं सा
ना ॥ ॐ उ द्र वे द्र ना का धि प न य स्वाहा ॥ उ द्र ॥ ॐ च द्र ना क ना धि प न य स्वा
हा ॥ पूर्व ॥ ॐ सूर्या ग्र ना धि प न य स्वाहा ॥ किं ये ॥ ॐ नू र द्र प धि विला का धि प
न य स्वाहा ॥ नू र ॥ ॐ वाम वि त्रा नू ना धि प न य स्वाहा ॥ द किं ॥ ॐ ना ग र ला
धि प न य स्वाहा ॥ उ न न ॥ धन प क प वा न प र ना ना ह्याः द्य ७४ वा द न ॥
सु ति ॥ वू द न मा मि त स त तः ॥ न न के य न पु नः धर्म त ल कः स य केः

१ श्रीगणेशाय नमः सर्व

नमामि सा ननंतथा ॥ शुद्धकदलः तुर्या तलासः सदृशः पद्मवत्सस्मिन्
सर्वज्ञविदया ध्यानः नमामि रम्यनंदनः श्रीपासजाता नमः वामसीतक
मधुत्रक कमलदल अतमः पृष्ठकः वंदनः यत्र मधुत्रः तुरवाणिनाका
नूकयामय ॥ थनातपनि ॥ विज्ञानत्यादि x ॥ ॥ तनुपापद

सनाकतकातीतः ॥ ० ॥ त्यादि x

॥ पुथमजागताः वाक्कः मकुठजाग

वाक्कः कतिनिशुचनत्यादि x ॥ श्रीगणेशाय ॥ पूर्ववत्तुवलिविषयः वाक्कायं

काननत्यादि x ॥ काप्रहायकउथा ॥

थनाकलसपूजा

थनादडापूजाकुरुसिंधर्मनपा

थनलिशिषापनिकर्म कथय नयः गुत्रूमलुलदनकवलिः मताः प
जाः पचगवाहनकः मंदलवलिविसर्गनि ॥ थनत्रसुगुगभतस्यः संष
लषनः रमिगधनः ॥ वाक्कः श्रीखविलादक ॥ ॐ नमः सर्वदलवंदनमदनि

वज्रीरुववजवश्च दं॥ॐ वज्रनक्षत्रं॥ वज्रनथियममंदलथामता॥थन
मलुलथामवाक॥ॐ सर्वनाथामनासानः सर्वतागैथानालयः सर्वधर्म
गनेनात्मांदसमलुलमूलमं॥ वृद्धमलुल॥ द्वादहास्वान१ मलुलतया॥ॐ व
ज्रपूष्यं दं॥ त्रिकिकास्यं हात्रलुपं वाक्क॥ॐ समनाहर्तुमां वृद्धा नृणां यादिकस
सितां॥ अ३ तान॥ॐ नमो वयः॥ॐ श्रीमच्छिवः वृद्धसगनरुक्कात्रकायपाया
वमनाद्यं प्रति कृष्णदा॥ वृद्धमलुलस्वानवायः॥ॐ श्रियो वैनावनाय

वज्रपूष्यं प्रति कृष्णदाः त्र्यादिष्वपक्षपचात्रपूजा। सुति।ॐ वृद्धं प्रवृद्धं व
धर्मो गार्जना नं विष्णुं समकलितुं गुणकनः समनमूनिदु गार्जशी
ममहावाधिसदां नमामि॥ संप्रदाहनवाक्क॥ वृत्तयसाहजवान्सम्यक्
वृद्धविद्यावनलसपन्नगतः सगतालाकविदनूरुनपूष्यदम्यश्वथिस
स्मादवानाक्रमानूषानाक्षवृद्धारुगवतः वृद्धनत्नाय वृद्धपूष्यमलुल
निर्यातयामि॥ सकप्रमानदाहलपाहलपं॥ नृक्षतलवहायक। वाक्क

ॐ नमो ब्रह्मायः महाकायः ॥ रायः ॥ त्रिदशायः परमात्मसमन्तागतवि
हायः ॥ धनुः कंसलः ॥ सत्वायः मिहादुरवकनकात्रिंशः ॥ दं वलिदिर्गुगन्ध
सायनः ॥ मूपरुद्रमांसर्वसत्त्वानां ॥ नृनाया सम्यक् वाधोपनिष्ठपनायः
आसृगतवनवज्रहृष्यादाः ॥ दं त्राः स्वाहा ॥ ॐ तिब्रह्मवलीविद्या ॥ नमो धर्म्मम
उल्लस्य ॥ वाक् ॥ ॥ नमो धर्म्मगसंभूतं नानवर्ग्याविश्वधकंसमनहृदक
या गंलाखमउल्लस्य ॥ धर्म्ममउल्लः दाहासां १ नमः ॥ ॐ वज्रपूषा दं ॥

त्राकिकास्यं हात्रलपः वाक् ॥ समन्तादत्रमां ब्रह्माद्यादि ॥ ॥ धर्म्म ॥ ताना ॥ ॐ
नमो धर्म्माय ॥ पादाय ॥ ॐ नमो धर्म्मयः ॥ त्रिदशायः परमात्मसमन्तागतवि
हायः ॥ मिहादुरवकनकात्रिंशः ॥ दं वलिदिर्गुगन्ध
सायनः ॥ मूपरुद्रमांसर्वसत्त्वानां ॥ नृनाया सम्यक् वाधोपनिष्ठपनायः
आसृगतवनवज्रहृष्यादाः ॥ दं त्राः स्वाहा ॥ ॐ तिब्रह्मवलीविद्या ॥ नमो धर्म्मम
उल्लस्य ॥ वाक् ॥ ॥ नमो धर्म्मगसंभूतं नानवर्ग्याविश्वधकंसमनहृदक
या गंलाखमउल्लस्य ॥ धर्म्ममउल्लः दाहासां १ नमः ॥ ॐ वज्रपूषा दं ॥

नवाय ॥ ॐ आर्यप्रज्ञापानमिताय वज्रपूष्यपुनिक्रसाहाः आदि x पके
पवात्रपूजा ॥ सुति ॥ आ सर्वरुतमानयत्समं आदि x ॥ ॥ संप्रदाहन
वाक ॥ ॐ नमस्तुत सागत्रपुवदिः ॥ साओपासिकपात्रनिकंतसोधर्मत्रत्ता
यः ॐ दंपूष्यमउलनिर्ग्यातयामिः ॥ सकप्रमानदाहलपाशलय ॥ त्रुक्त
लखदायक ॥ वाक ॥ ॐ पुष्पापात्रमिताय महापितमहासुतमहानीलत्रलप
कत्रपूष्यदस्तः ॐ दं वलियक्षमृतं त्रुत्रिद्युपिचूरपुष्पावर्द्धनीः कलर

मधावर्द्धनिधिति २ वृद्धिवर्द्धनी स्वाहा ॥ ॐ ॥ ततासंघमउलथाय ॥ वाक ॥
सर्वत्रकनसंपूर्तः सर्वत्रकनवर्जितसमतलद्रुचित्राग्रंघाषमउलम
लम ॥ संघमउलदाहासी १ तय ॥ ॐ वज्रपूष्यदं ॥ शकिकास्यं हात्रल
पः वाक ॥ समन्वाहत्रनुमावृद्धात्रसखादिहसंस्तुतां ॥ धात्रुतानः ॐ नमो
संघाय ॥ वादाद्य ॥ ॐ नमोसंघायः वलदं कमलविस्तारार्कत्रेलाकाधि
पतिप्रतत्रकवर्जमहा ॥ कलोकनाथनमामि हः श्रीमहि संघमउ

लहकावकायः पाद्यं प्रति कृत्वा हा ॥ संध्यं मंजुलसस्त्रानवायः ॥ ॐ अर्थ
 अर्थवलाकिं तस्त्रायवज्जपूष्यं प्रति कृत्वा हाः आदि ॥ ५ ॥ पंचपत्र
 पूजा ॥ सुति ॥ संध्यं नमामि सततं वनपद्मपालीः मेलात्मकगगलस
 मन्तुलदुर्गाकाधियापनहिताधतमशुधाष्विस्कंहिनं कृत्रिखगहाप
 नमामि तद्वा ॥ संप्रदाहनवाक् ॥ सति सद्येऽभतापतिरुलंप्रतिपन्न
 गमिभूनागमिनं सति सद्येः अहन्तुलंप्रतिपन्नकाः अहन्तुलंप्रतिपन्नकाः अहन्तुलंप्रतिपन्नकाः

रजवांनार्थावहिकवाधिसत्त्वसद्येःत्रद्वनियःत्रूलिकत्रनियःत्र
नूलत्रपूर्वकत्रद्वनियाःलाकस्याःतस्यैत्रार्थावलाकिनस्वत्राय
पूष्पमत्रुलनिय्यातयामी॥त्रकतलस्वदायकवाक ॐ नमालाक
नाथायदवासूत्रनत्रयकत्राकेसादिहिःवदिनपादपद्यायत्रुल
षनत्रकसलाद्वलविदिनस्यत्रायमहाकात्रुलिकायव्वद्वलि
यकामृतादिसहितरुद्ररुद्रसर्वसत्त्वानांनत्रकादिदःस्वद्वला

21

ASIA ARCHIVES

741

THE ASIA ARCHIVES

नय २३ उच्चैः २ समूधन २ वृद्धः धर्मः संघः सत्र वादिसत्र न
ॐः आः किं दू दू स्वाहा ॥ ॥ धनवृद्धः धर्मः संघयाः स्वकन
॥ साहं मदसिता वीमां वलायां मूपादायः शिवदा वाधिम
पुलनिरुव पुलातु तावत्कृपाकनामिः वृद्धरुगवत महाकावनी
क सर्वरुः सर्वदशितः सर्वतुयाति तमहापूतृषः अरुदकायः म
हाकावलीकः धर्मकायं सर्वत्रकलसंपूर्णः शत्रुलंगकामिः नि

वृद्धनयाकायं द्विपदानामग्रं नृता दृष्टः वृद्धसर्कः माककना
मि ॥ ॥ देनाथरुगुनरुमिस्येन थूगुलिनामनः थयदशनाया
काथनिया थूगुलिदिन सः थूगुधर्मलायमातग्वकाताः वृद्धमकुमरुल
थलातात्रिपनिस्येन थललयरुलः देनाथरुगुनरुधी वृद्धरुगवानरुयिगाधि
क्रपालसाकनूनावक सर्वरुधालसा रुरुविषयवर्तमानसिधाडाविषा
कप्रसमसं सत्वपानिरुवनाडाः कनूनावक रुयाडा वलिपारुयवावकाडा

॥ हनाथ हगुत्रः थनिग्रादिनस थडा २ नामनंद सनायानाडा थनिग्रादिन
 सः थगुलि धर्मलापयातः गलता वाधिमगुलखलुमरुलः थलताः अ
 वलिका संघयाक सननडा न ०० काश्ल ॥ हगुत्र श्रीसंघश्रूपाथि क्रधल
 साः श्री अर्थी वलाकि तस्रः समं सत्वपालिः सकलामृकि कस्यं विष्ठाकम
 थधि कपत्रमस्रः संघयाक सननडा नधकः त्रिमिस्यं पाथनायाना ॥
 ॥ समंचाद ननु मांदगदिगल लोकधनुसः निपतिताः वृद्धाह गवता

धि
 वासंत्वा ग्वत्राचार्यपाधायः ॥ ॥ हनाथ हगुत्रमात्मा थनि कलपालय
 कृपाः मिगुलिदिसानमूनाडा विष्ठाकर गवता तथा गतूरूपानि स
 कलंः हनं वाधिसत्वपानिसकलः गुत्रुड पाध्याः थथिपानि हडा न
 त्रिपानिसकलं सननडा नधकं पाथनायाना ॥ ॥ अहमवनामात्र
 किंचित् कायवाधुनाहिः सवृद्धवाधिसत्वात्मानापित्तोः तदं न्यां स
 गमा ०० हगुत्रमनिह गवता नषमया पापक ३ कर्मकृतः कालितवा

हवन् ॥ ॥ इनाथ हपुह थनित्रिमिसनप्राथनायानात्रिमिसन
चिकिधंखसंयानागुपापदयूडा सनिडनयानापापदयूडा हनेन
गलनयानागु वचनयानागुपापदयू समस्ततथागत वाधिसत्वप
निक्रयानागुपापदयूडा गुत्रु गुत्रुमाम संचपनिकदादयाना
गुदयू हनेन हथुडमसयानागुपापदयूडा ॥ ॥ तत्सर्वत्रकंधापिदधि
त्वाः सर्ववृद्धवाधिसत्वानाः श्रवायस्थानिकः अगयावत्रयाप्रवत्रयाः

पुनिदसयाः शानूनस्यत्रलपुनिच्छादयामि ॥ ॥ थपाप सकलच्छु
लियानाडा ज्वलमूनकाडा निग्रनकाडा समस्त तथागतपनिद
डानः वाधिसत्वयनि गुत्रुपनि थधि २ पि गुत्रु २ हयाविश्रकपनिद
नत्रिमिसनथमनयानागुपापसकलं नालनधकंप्राथनायाना
हगुत्रु हपुमीत्मा ॥ ॥ थनात्रमाचयागलुलथाय ॥ वाकं ॥ सर्व
सत्वदिनार्थयः शुद्धप्रकृतिनिर्मलः समन्तरुडवावागुमनात्रथ

मधुलमरुमं॥ ॥ धनपातार्थः वाक्क॥ ॐ श्रीमन्मन्त्रिणीश्रीमन्मन्त्रिणी
लोकेश्वरहरगन्धर्वकायपाद्यावमनार्थप्रतिक्रियादा॥ ॥ शक्ति
संहारलपवाक्क॥ ॥ ॐ समन्वाहनं तु मां वृद्धाश्रयत्वादिह संश्रिता॥
ॐ श्रीमन्मन्त्रिणीश्रीमन्मन्त्रिणीश्रीमन्मन्त्रिणीश्रीमन्मन्त्रिणी
श्रीकायसंहारवनाथं कर्तुं नाथस्त्रिगुणमानसः श्रीमन्मन्त्रिणीश्रीमन्मन्त्रिणी
कर्तुं नाथं नमामिहं॥ मधुलस्यैतं॥ ध्यानवाक्क॥ ॐ सत्तावसूदासर्वध

श्रीमन्मन्त्रिणीश्रीमन्मन्त्रिणीश्रीमन्मन्त्रिणीश्रीमन्मन्त्रिणी
ननविश्वदलपद्मकंधिकापत्रिचतुमधुलः तस्यापत्रिद्रिः कार्त्तनस्य
त्रिनामनः श्रीमन्मन्त्रिणीश्रीमन्मन्त्रिणीश्रीमन्मन्त्रिणी
हं श्रीमन्मन्त्रिणीश्रीमन्मन्त्रिणीश्रीमन्मन्त्रिणीश्रीमन्मन्त्रिणी
सः शतामकुठकः धनसाकं मन्त्रिणीश्रीमन्मन्त्रिणीश्रीमन्मन्त्रिणी
कं वनदं पं कं शालिनं श्रीमन्मन्त्रिणीश्रीमन्मन्त्रिणीश्रीमन्मन्त्रिणी

धनयासयायः॥ ॥ॐ दक्षिणहस्तशुक्राग्रनवदुमकुलं॥ चन्द्रमाशुभं
 ॥ॐ वर्महस्तशुक्राग्रनवदुमकुलं॥ शुभस्वउ॥ ॥ॐ अं त्रिं स्वं दं॥ त्रं गु
 लिनिय॥ ॥ लो मां पां तां वं॥ स्वउं त्रं गु लिनिय॥ ॐ वज्रपद्महस्ताः सर्वतथाज
 नवजाली त्रसमयदं॥ सिलसंधिय॥ ॥ॐ दं त्रय विजयदं॥ कथू॥
 ॐ दं स्वावनदायदं॥ हृदि॥ ॐ दं द्वात्रयपुदायदं॥ नाहि॥ ॐ मेति
 यदं॥ दक्षिणवक्त्र॥ ॐ छितिगहदं॥ वामवक्त्र॥ ॐ वज्रपालियदं॥ द

दर्पयाय

छिनकल्म॥ ॐ स्वगहदं॥ वामकल्म॥ ॐ लाकध्वनसर्वनायदं॥ लल
 न॥ ॐ मश्रयायदं॥ नासिका॥ ॐ सर्वनिर्वन्तर्विस्तृतिनदं॥ सील॥
 ॐ समनरुददं॥ चक्रद्यानश्रुतत्रसमनसर्वागेष॥ ॐ दं अत्रिनाय
 दं॥ दक्षिणवक्त्र॥ ॐ अत्रिनायदं॥ वर्मवाक्त्र॥ ॐ दं मानसेनपुमद
 नायदं॥ मुख॥ ॐ दं शुक्राग्रमृत्पुष्पमनायदं॥ हृदि॥ ॐ दं धनद
 यदं॥ दक्षिणज्ञान॥ ॐ दं वसुधनायदं॥ वामज्ञान॥ ॐ दं अमाद्यपा

भद्रि॥ सिलसं॥ वृत्तिन्यास॥ ॥ त्रिमाद्यपासमलुलः पक्वपत्रपूजाः
 पूष्यन्यास॥ ॐ त्रः कृत्वा हा॥ दधुसं॥ ॐ त्रिं स्वाहा॥ दधुसं॥ ॐ मलिप
 यं कृ॥ दधुसं॥ ॐ त्रमृतालाय स्वाहा॥ पृष्णलिवन॥ ॐ त्रमाद्यां कृ॥
 यं कृत्वा हा॥ त्रुज॥ ॐ त्रायायैवजपूष्यं प्रति कृत्वा हा॥ दक्षिण॥
 ॐ रुक्मयेयवजपूष्यं प्रति कृत्वा हा॥ खडा॥ ॐ सुधनकृमायायवज
 पूष्यं प्रति कृत्वा हा॥ त्रुज॥ ॐ त्रार्थावलाकितं स्वायायवजपूष्यं प्रति

कृत्वा हा॥ नेमव्य॥ ॐ खं खलप्यनाय स्वाहा॥ वायुवा॥ ॐ हयग्रीवा
 यवजपूष्यं प्रति कृत्वा हा॥ ॐ शन॥ ॐ डाय स्वाहा यादि० ॥ पक्व
 वात्रपूजा० तु सि॥ लाकसुत्रं लीलसां कं त्रिमाद्यगुनसागरंः त्रि
 तारुकृतमौलिः नमामि त्रिमाद्यपाशीनः श्रीकान्तसहवनाथं क
 रूपाथं सिग्धमानसं त्रिमाद्यपासनामानां लाकनाथं नमामि ह॥ ॥
 धनवर्तकाय वाक्॥ ॐ नमो त्रिमाद्यपाशीनां लाकनाथः धर्मसूत्रं

ब्रह्मसिंह

पुनश्चामिवजधर्म्यज्जी ३ स्वाहा ॥ ॥ मंदलसतया ३ वाक् ॥ ॐ नमो श्री
ब्रह्माद्यपागलाकसनाय ॥ शुद्धं कुरु ननु रवाहसः सहसा यद्यकनं स
स्मितः सर्वं विदधः नमामि हर्यः श्रीपागलाकान्तमं वाभतसीतकम
लंदुतातमं पूरु कं वदं पत्रम्यस्रनसिनसालाकानु कं घामय ॥ न
दाकाय ॥ थन नृधवियः तायः आखः पक्कं नलः दाहासागुनः साद
द ॥ वाक् ॥ ॐ सनरसिनिरकनरपचरहनरहोहो द्विद्विद्वद्वः ॐ का

ननु कुरु सर्वधरधितिरधनूरननरमनरवनरनस्मिंसतसह
सपमलितलानिनेननरनपरहगर्वः सामादित्वयमवन्ननकव
ननु कुरु सरिवदवगलावित् वननकमलायः नृनामानस्य आयून
लो रुकामनार्थः श्रीब्रह्माद्यपागलाकसनाय नृध्वप्रतिष्ठे स्वाहा ॥
संखपूजायाय ॥ ॐ संखनिधानाय नमः ॐ पद्मनिधानाय नमः ॥ थन
निग्रकहादाहासाः नियकृष्ण आखतान ॥ ॐ नमो वलप्रयायः ॐ न

मा अथावलाकिं तेष्वनापवाधिसत्वायः महासत्वायः महाकात्रनि
 कायः तद्यथाः अमाद्यसिलमहाशीलशुद्धसत्त्वरत्नरत्नसमृत्तरत्न
 अविह्वलितत्वरत्नसमन्तावलाकिं तेष्वनापवाधः ॐ अद्दद्दद्दद्दद्द
 ॥ धाल २१ ॥ शक्तिः लयसथनाममृत्तुलसंहायकं तय ॥ वाक् ॥ ॐ अ
 माद्यपाशकिंः सर्वदुःखसमयमृदापुष्टकधर्मगुणसिं समुद्रकाना
 शक्तिं पुष्टिः सर्वत्रकाकृत्स्नसिं साहा ॥ धनस्य कने ॥ ॥ समन्ताद्

स १

तद्दंतः तथानावायाइहतावावतजिवः प्रानातिपापः पुतिवित्रम
 तांनिर्दंतदधुनिर्दंतशस्त्रुलजितोदयावन्ताः सर्वसत्त्वेषुः अरुसक
 ढसंः पिपिलिकामपादाय ॥ हसिखयिनि कृपनि सनः नृकचिह्नप
 दाडानंदनः गुननवाकादताः गत्यधालसाद्रपा २ याः बद्धपूतपनि
 स्यंज्वलनजिडाववयइतलः प्रानिस्मायगुनमयाकः ससुत्रसुन
 पालाडामस्या कः महानकावकः कनूनावकः शयाडाचानः सम

संप्रानिस्तककत्रुनाक्रियातयाडात्रकापाकः दनंखननंरन्मरुडा
पनिः गत्रउत्रात्रदंसचकात्रकुमिवासापायिंसम्यतः दनंधूलनत्र
मरुडाभिमिवात्रादियथथिपिंसत्वपानिस्तकल्यंथनधर्मनप्रतिप
लमातं ॥ ॥ यवंमवाहंमावलामूदायः शवत्त्रलात्रिगामिनीता
वत्सर्पादमातनः प्रानास्तिपापः पुहायः प्रानास्तिपापंप्रतिविलमामि
॥ निहतदद्यानिहंरुगस्तुलत्रिनादयावताः सर्वसत्त्वषः प्रागितरुषः

अनसः कटसः मरुक्कटसपिपिलिकामूपादाय ॥ ॥ दनाथहगुत्रः
थनि कुलपालयात्रास्तथजिमिसनः थगुधर्मलायताज्वलानाधलस
थनि याः त्रानिनिस्तज्वलतास्यउदयमरुलाउलत्वं प्रानिस्त
यंमखतः दनंदायंमखतः मरुत्रसुलायालाउस्यायंमखतद
नंप्रानिषनाउदयावत्ककत्रुनावत्तयशलः खननंरन्मरुव
सापायिंधूलनत्रन्मरुवमिमिवात्रादियनः थगुधर्मनप्रतिलयाय
का

शूलं ॥ ॥ नृवंमवा दंप्रथमनागननषांमार्थानामदनां मदनवृद्धः
विवृद्धस्य नृवंविधियः नृवंकतामि ॥ ॥ दनाथदगु नृवाचार्यः नृ
आथनिष्ठलयालयात्रा नृथांतिमिसाः क्रयाश्यावृद्धनथागतपति
साः गत्यक्षिथं विधिकर्ममातः नृआतिमिस्यनं नृथां कर्मपाप
शूलं ॥ ॥ पनत्रपदं समन्वादनः हृदकनृथा नृथाश्याहृन्ताः नृव
क्रिवं नृदसुदानं नृवक्रवर्थाः मखावादः सूनामेत्रयः मशपात्तद

सुनः नृवांगितावा श्रमानाः गंधविलपनः वर्जकं लखना उच्चसयनं
महासयनं नृकालरात्रनपूतिविनमता ॥ ॥ दसिखपनिष्ठपनि
स्यं हृदकनः गुनन नृक्रादय गुखगथधलसा क्रयायावृद्धपूत्रपति
स्यनः त्रिआनवदलपूनालः मवयाधनमविषकं मकाडा नृवलस
रात्रनमयाकः वृद्धवर्थाधललयागः मखगु मन्तागु मया
कः नृसखरमक्रकः हनः लूपूगतिवर्जा आदिधनुत्राकपः

मधुपानत्रादियं काययागु ॥ रुक्मनमया कः दनः लाः डाः खः
चिः चिकः थधिगु वसुक कः मनः ॥ दनः नानावाय थयः म हल
ः पारवं न द्रुयगु ॥ अनेकरत्ना कः नम चकः नखा कः पक्क गन्ध न
लेय नम यो कः त्रंगी चंगी ठा मत नम तिडाः दनं म चखा तालि वाः पलं
कीः दलिः गमदिः वदिः नाला सा लुगम ॥ लां मुसिक गमः थधिगु त्र
समाय म तठाः दनं अ वल संहा रुक्मनम यो कः थधिगु धर्म लाय

यातः कृपनि सनः ताल त माल ॥ ॥ नवं म वा दं अ म कं न्नाया
ः ॥ माः वा ला मू पा दा यः शा वत चू ना त्रि गम मिनिः शा वत स थ्या दया
त नैः अ द रु दानः अ व द्वा च योः मे र वा वा दं स न्ना म त्र यः मे य मा द रु
नः न ल्व गी तः वा दि मा लाः ग म्ध विल य नः व ल क रु ख नः उ च स य नं
म हा स य नः अ का ल हा रु नः पु ति विल मा मिः अ न्य मा दः अ क मा रा
नः त र वा मा यी नाः सि ष्ठाः अ न् र थः अ न् र वि धि यः अ न् क लो मि ॥

॥ दनाथ दगुन सागरः थनिक्कल पालयाः त्रः रूथ त्रियनिमनः थ
उरनामनः थगुलि धर्मला यया निमलिनेः थनिया नात्रिसडान
उः उवलताः सूर्या उदयम इल थलताः त्रः सत्यख द्वायं मखताः द
नं मवया धनम वियक कायम खताः दनं व द्वायः धललया
उः मखगुः मत्या गुयाय मखतः दनं कायया गुः गमि वेफा
त्रिदि यसे त्रनः धतुनः थथि दगुः कुं वसुन यमखतः दनं

नाना वायः थयगुः म दालगुः प्यारवन दयगुः त्रनगप केग
धनलपनयायगुः दनना ना व द्वायानि साः उ सतनः तिया उः त्र
नगला कस्वाननं कुं दा उः त्रनि त्रसनः खाताः मचः पालकिः वगिः
लिवाः दगुः दगुः ना ताला साः नायि गुला साः त्रनि सख हागया
यगुः थथि गुमक तां ताल न इलः दनाथः दसा सा थनि त्रियनीमनं
थच्या ताः वसु कः त्रधर्मः धक सि या उः समरुं ताल ना उ वाधिसुय

निस्यनं गायविधियात्ः आताथनिद्रिपनिस्मनंः कुलपालस्यनंः अ
स्यदयाथंः थथिगुधर्मलापयाकात्रनंः थतत्रकर्मः सकतांतोलन
इलं ॥ ॥ अननादंसिलसम्भनंः समादाननः अनागतः धनितथा
गतालवयंः अदन्तसम्यक् वृद्धविद्याचत्रनसंपन्नसुगताला क
विदन्तुत्रयत्रषदम्यथा नथिः सास्त्रादवानाकं मनूयानाकं वृ
द्धाहगवान् वृचः पाषधसितः विलुपतिस्कात्रायः यागसहात्रा

यः सर्वसत्त्वानाकं उर्लयः वृद्धसत्त्वप्रापयामि ॥ ॥ दनाथः
दगुत्रथनिक्कलपालयादयानंः थथिगुधर्मलानाताः विपश्चित
थागतः प्रहितिः समस्तं तथागतश्रुतापनिमकलः त्रिमिस्यनपू
त्रायायत्रागइलंः दगुत्रः अकृतथागापनिशयः गाथिं द्रव्य
लसाः समालयाः रतलविद्याः सियाताविद्याकद्वः संसात्रयः
हमाताः अनगुः श्रुयातानगुः रुनेश्रयाताः आयिगुः थानस

कतांसि घाटा विद्या कदा दनं दक विद्या न संशु क श्या उतात
 लमदस्य निद्रु श्या उता समस्त सत्त्वपानिया ललाकाया उता विद्या क
 द्वा ॥ दनं दवला कया मनूष्या ला कया दानथा सदधनया नाता विद्या
 कथाथि द्वा तथागतपानिसया गुधर्मवर्तः थूगुत्रुमिवल्याय क
 याकात्रनंधलसा विलया अलंकात्रयाय विलयनिष्कात्रयायतः
 दनसमस्तः यागवांछालाययातः सर्वसत्त्वप्राप्तिपानिसकलं उक्त

५ सगं वियः वर्तकाल उक्ताय ५

तयाप दय कयात दनं त्रिमिस्यनं तथागतया पदलाय दय
 कयात थूगुधर्मकुलपालया असाथः अता त्रिमिस्यनं थध
 मवर्तः सदा कालं धललय शलः दनाथ दगुत्रुधर्कसिष्यप
 निष्यनविनयाना ॥ ॥ ॥ यनत्रलमदल दानक ॥
 सिहं लय ॥ किना ॥ क्रमापन ॥ सताकन ॥ अलीवाद ॥ दवद
 किना ॥ मलुलधयः वर्तकान द्वा ॥ मलुलत्रल उताय गु
 वाके उतावजवचीव ॥

त्रूपूजा दक्षिणा निमलासि क्रलंति यः पालंयाय ॥ ॐ ति
पोखधवल पथमदिनः ॥ ॐ ॥ धनलिसतिखन ॥ पूजा
संकल्पयाक ॥ गुत्रमधुल ॥ कसः सगं ॥ ॐ ना मदाका ॥ म
त्राः वालकुत्रि मता पूजा ॥ दवपूजा ॥ मधुलपूजा ॥ धूनकाव
॥ सिखयनिः कर्मकधून तस्यः गुत्रमधुलवलि कीयः ॥ मता
पूजा ॥ वलकाहन ॥ वाकः ॐ वज्ररुतव ॥ पूजायाना ॐ मधुलसंक्रय

॥ कृमादान ॥ धनलिसिष्याधिवासनयाय ॥ व्रतसूत्रकाज्ञानक ॥ मता
रुः ताचा वज्र सिद्धलय ॥ नकिधलंदानक ॥ कितान ॥ कृमा
पनः सताकृत्रासिवचनः दवदक्षिणा मधुलविस्रनः सगं
तयः कलसतयः कसकसिंक्रमंतयः गुत्रपूजा दक्षिणा सकल
यताः कसक लडाकायसिंक्रलंतिकः सगनेतिकः स्नानविषयः
सूत्रविषयः ॥ नतानत्रप्रवादविधिमाह ॥ धनयकेयवानप